की गयी है जिसमें दसवीं लोकसभा के कार्यनिष्पादन के आंकड़ों को चार रूप में दर्शाया गया है और मैं सोचता हूं कि यह पुस्तिका माननीय सदस्यों को दी जा रही है। इस पुस्तिका में अन्य लोकसभाओं के कार्यनिष्पादन की दसवीं लोकसभा के कार्यनिष्पादन से तुलना की गई है। इससे हमें स्पष्टत: पता चलेगा कि उक्त अवधि में हमने क्या किया है। मेरा विचार यह है कि हमने अच्छा कार्य किया है। यदि हम आँकड़ों की तुलना करें तो हमे कुछ क्षेत्रों में अपनी उपलब्धियों पर प्रसन्नता होगी और कुछ क्षेत्रों में हम बेहतर कार्य करना चाहेंगे। अच्छा कार्य करने और संसद में हमारे कार्यनिष्पादन में सुधार करने की काफी कुछ गुंजाइश है।

हमने लोकसभा में जो कुछ भी किया है वह सब सदन के नेता यानी प्रधानमंत्री, उनके सहयोगियों और मंत्रिपरिषदों तथा सरकारी पक्ष के सदस्यों और वर्तमान और भूतपूर्व विपक्ष के नेताओं तथा राजनैतिक पार्टियों के अन्य नेताओं तथा विभिन्न पार्टियों के सदस्यों के भरपूर सहयोग से संभव हो सका।

यह सब कर पाना संभव इसलिए भी संभव हो सका कि हम सभी को उपाध्यक्ष से भी भरपूर सहयोग मिला। उन्होंने इस सदन में अन्य पीठासीन अधिकारियों के साथ-साथ अध्यक्षता करने का कष्ट उठाया और हम माननीय उपाध्यक्ष महोदय को विशेष धन्यवाद देना चाहेंगे। जो सदस्य यहां पीठासीन अधिकारी के रूप में रहते रहे है उन्होंने हम सब की अच्छे ढंग से मदद की है और हम उन्हें भी धन्यवाद देना चाहेंगें।

इस सचिवालय के अधिकारीगण ने पर्दे के पीछे से अपनी भूमिका निभाई है।

उन लोगों ने कितने घंटे तक कार्य किया यह हम सभी वास्तव में नहीं जानते। हममें केवल कुछ ही लोग इस सचिवालय में कार्य करते रहे हैं तथा यह जानते हैं कि कितने घंटे तक वे लोग कार्य करते रहे हैं और हम उन्हें बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहेंगे।

विभिन्न मीडिया के जिन सदस्यों ने संसद की गतिविधियों की रिपोर्टिंग की है, मैं सोचता हूं उन्होंने जनता को प्रमाणिक रूप से अवगत कराने का प्रयास किया है। सभी क्षेत्रों में, सुधार की गुंजाइश रहती है लेकिन सभी विषयों को अत्यंत प्रामणिक रूप से प्रकाशित किया गया और हम उन्हें भी धन्यवाद देना चाहेंगे।

मैं सोचता हूं कि कुछ महीनों के अन्दर हम लोगों के फैसले के लिये उनके बीच जाएंगे और मैं यह कहना चाहूंगा कि आप सभी पुन निर्वाचित होकर इस सदन में आएं।

कई माननीय सदस्य गण: धन्यवाद, महोदय।

अध्यक्ष महोदय: अच्छा, हम हमेशा यही सोचते हैं

[हिन्दी]

हम रहे न रहे, तुम रहें तुम्हारी शान रहे।

इस सदन की शान रहनी चाहिए ये आप सब की शान रहनी चाहिये

और हममें इस लोकतंत्र की शान रहनी चाहिये। हमारे देश की शान और हमारे देश की यूनिटी रहनी चाहिये।

[अनुवाद]

मैं माननीय प्रधानमंत्री जी उनके सहकर्मियों को और सभी दलों के सभी नेताओं तथा माननीय सदस्यों को और उन अन्य सभी मित्रों को हार्दिक धन्यवाद देता हूं जिन्होंने मेरे कर्तव्यों के निर्वहन में मुझे सहयोग दिया। बहुत-बहुत धन्यवाद।

प्रधानमंत्री (श्री पी.वी. नरसिंह राव): अध्यक्ष महोदय, मैं आपकी भावनाओं से पूर्णतया सहमत हूं और सर्वप्रथम मैं, अध्यक्ष महोदय, उपाध्यक्ष महोदय तथा पीठासीन अधिकारियों के पैनल की, उनके द्वारा सदन की कार्यवाही सुचारु रूप से चलाने के लिए भूरि-भूरि सराहना तथा प्रशंसा करता हूं, उन्होंने न केवल सदन की कार्यवाही को चलाया अपितु वास्तव में देश के प्रजातंत्र को नई रोशनी दी है।

महोदय समिति प्रणाली ने जिसे आपने प्रारम्भ किया है मैं ऐसा इसलिए कह रहा हूं क्योंकि हम में से अधिकांश को इस प्रणाली की सफलता के संबंध में संदेह था - बहुत अच्छी तरह कार्य किया है तथा इसको देखकर यह कहा जा सकता है कि इससे चर्चा के विषय को आवश्यक गंभीरता मिलेगी। समितियों का यही प्रयोजन है। वे विषय की अधिक व्यापकता में जाती हैं, उसकी विस्तृत जाँच-पड़ताल करती हैं तथा ऐसी रिपोर्ट तैयार करती हैं, जो कि अत्यन्त अन्तर्दृष्टिपूर्ण होती हैं, तथा जो अन्यथा किसी भी प्रकार कभी भी हमें नहीं मिल सकती थी।

महोदय, मैं यह कहूंगा कि अनेक अर्थों में दसवीं लोक सभा अन्य लोक सभाओं से अत्यन्त भिन्न रही है। सर्वप्रथम, इसे अल्प कालिक समझा जाता था। प्रत्येक व्यक्ति का यही पूर्वानुमान था कि यह अधिक समय तक नहीं चलेगी तथा कुछ ही महीनों में हमें जनमत के लिए जाना पड़ेगा। स्वयं मुझे भी एक काम-चलाऊ प्रधानमंत्री कहा गया। इसीलिए इस सभा को भी काम चलाऊ सभा कहा गया। लेकिन हुआ यह कि यह अंतराल पाँच वर्षों तक चला। इसका श्रेय पार्टियों के नेताओं को सदस्यगणों को तथा प्रत्येक व्यक्ति को जाता है जिन्होंने इसे संभव किया। मुझे कोई संदेह नहीं है कि इस दसवीं लोकसभा को अपने कार्यकाल को पूर्ण करने में, केवल एक ही पार्टी नहीं अपितु दूसरी अन्य पार्टियों का भी सहयोग रहा। मुझे याद है कि इसके

समक्ष लगभग तीन अविश्वास प्रस्ताव आए। मैं एक अल्पमत सरकार की 60 और 40 वोटों से विजय को स्पष्ट तौर पर नहीं समझा सकता, अपितु केवल इतना कह सकता हूं कि दूसरी ओर भी हमारे कुछ अदृश्य मित्र हैं। महोदय, यह सर्वथा, लोकतंत्र के भविष्य के लिए तथा लोकतंत्र को शक्ति प्रदान करने के लिए अच्छा होगा तथा मैं यह सोचता हूं कि ऐसा होना भी चाहिए। मुझे आशा है कि आगामी वर्षों में आगामी लोकसभा में हमारा प्रतिनिधित्व लोकतंत्र की जड़े और गहरी तथा मजबूत करने के अपने कर्त्तव्य को वस्तुत पूरा करेगा ताकि संसार की कोई भी शक्ति - चाहे कोई पार्टी हारे या जीते, चाहे कोई पार्टी सरकार बनाये या न बनाये देश में प्रजातंत्र की जड़ों को न हिला सके।

मुझे इस बात की जानकारी भी है कि लोकसभा सचिवालय का स्टाफ भी पूरी कार्यकुशलता से कार्य कर रहा है। उन्होंने निर्धारित समय से अधिक समय तक कार्य कर के हमारी चर्चाओं को सफल बनाया तथा हम उन सभी जिन्होंने इस लोकसभा को सफल बनाया तथा इसके लिए कार्य किया, के प्रति आभार प्रकट करते हैं। विशेषत: आपके कार्य करने के तौर तरीके से सदस्यों को अपनी कठिनाईयों का निवारण करने में तथा हमेशा उपयोगी वाद-विवाद करने में सहायता मिली। वास्तव में हमने एक-दो चीजें धैर्य व दृढ़ता का प्रयोग आपसे सीखा हैं, यह दोनों चीजे इस प्रकार से जुड़ी होती थी कि हमें यह नहीं मालूम चल पाता था कि कब आप हम पर कृपा कर रहे थे और कब आप दृढ़ता/कठोरता का प्रयोग कर रहे थे। इन दोनों का समावेश सुन्दर तरीके से किया गया है। यह हम, केवल आपकी प्रशंसा दृष्टि से नहीं कह रहे हैं। मैं वास्वत में यह महसूस करता हूं। कि सम्भवत: यह वर्ष, 5 वर्षों में सदन का सबसे अधिक अशांत वर्ष रहा है जिसमें सभी प्रकार की अनिश्चितताऐं रहीं है। महोदय, मैं आपका अभिवादन करता हूं। मैं इस संबंध में भी सजग हूं कि प्रेस तथा मीडिया ने भी अनेक तरीकों से हमारी मदद की है। उन्होंने समय-समय पर हमने जो कुछ भी कहा उसको उजागर किया है विशेषत: वे चीजे जिन्हें हम प्रेस को ध्यान में रखकर उजागर करना चाहते थे, तथा कभी-कभी उन्होंने हमें भरपूर कवरेज दी है। मैं यह भी प्रतिवाद किसी के डर के बिना अवश्य कहूंगा कि इस कार्यकाल के दौरान प्रेस की रिपोर्टिंग कुल मिलाकर वस्तुपरक रही है तथा वस्तुनिष्ठता के मानदण्डों के अनुरूप रही है। मैं पुन: उनको धन्यवाद देता हूं।

इन शब्दों के साथ, मैं सदन के सभी सदस्यों को आपको व देश को शुभकामनाऐं देता हूं क्योंकि इस लम्बी दौड़ में हम प्रजातंत्र की दौड़ में मील के एक पत्थर को पार करके दूसरे की ओर अग्रसर हो रहे हैं।

अध्यक्ष महोदय: एक बात जिसे में रिकार्ड में जोड़ना चाहता हूं कि वह यह है कि स्थाई समितियों की अब धारणा मूलत: प्रधानमंत्री जी ने प्रस्तुत की थी तथा सदस्यों ने इसका समर्थन किया था तथा इसकी सभी ने प्रशंसा की है तथा हमें इस से अत्यधिक प्रसन्नता है।

अब हम वन्देमातरम् के लिए खड़े होंगे।

8.22 म.प.

राष्ट्रीय गीत

(राष्ट्रीय गीत की धुन बजायी गयी)

अध्यक्ष महोदय: सभा अनिश्चितकाल के लिए स्थगित होती है।

8.24 म.प.

तत्पश्चात् लोकसभा अनिश्चित काल के लिए स्थगित हुई।